नं. 1

संजीव® बुक्स

हिन्दी साहित्य-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2026 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा जारी प्रश्न बैंक के प्रश्नों का हल सहित समावेश
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2027

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  ओम प्रिन्टर्स, जयपुर

  ★★★★★★★

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य–कक्षा-12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	**अंक**
अपठित बोध	12
रचना	13
काव्यांग परिचय	10
पाठ्यपुस्तक : **अन्तरा** भाग-2	32
पाठ्यपुस्तक : **अन्तराल** भाग-2	13

अंक

अपठित बोध : 12

1. अपठित काव्यांश (तीन बहुचयनात्मक एवं तीन अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6
2. अपठित गद्यांश (तीन बहुचयनात्मक एवं तीन अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6

रचना–अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित– 13

1. कविता, नाटक, कहानी की रचना (दो बहुचयनात्मक एवं दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 4
2. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया (दो बहुचयनात्मक एवं दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 4
3. नये और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन (300 शब्द) (विकल्प सहित) 5

काव्यांग परिचय 10 अंक

(छः रिक्त स्थानों की पूर्ति के प्रश्न, दो अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न)

1. काव्य-गुण, काव्य दोष 3
2. छन्द—गीतिका, हरिगीतिका, छप्पय, कुण्डलिया, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, कवित्त, सवैया 3
3. अलंकार—अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टांत, प्रतीप, मानवीकरण, व्यतिरेक 4

पाठ्यपुस्तक–अन्तरा भाग–2		**32**
1.	सप्रसंग व्याख्या (गद्य + पद्य) (विकल्प सहित)	10
2.	कवि/लेखक परिचय (दो लघूत्तरात्मक प्रश्न, कवि तथा लेखक का साहित्यिक परिचय) (प्रत्येक 40 शब्दों में उत्तर)	4
3.	प्रश्नोत्तर गद्य भाग से (दो बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ–उत्तरात्मक प्रश्न–60 शब्दों में उत्तर)	9
4.	प्रश्नोत्तर पद्य भाग से (दो बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ–उत्तरात्मक प्रश्न–60 शब्दों में उत्तर)	9
पाठ्यपुस्तक–अन्तराल भाग–2		**13**
1.	एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60 शब्दों में उत्तर)	3
2.	चार बहुचयनात्मक एवं तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न–प्रत्येक 40 शब्दों में उत्तर	10

निर्धारित पुस्तकें–

1. **अन्तरा–भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

2. **अन्तराल–भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

अन्तरा भाग 2

पद्य खण्ड

1.	जयशंकर प्रसाद	1–11
2.	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	12–22
3.	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	23–34
4.	केदारनाथ सिंह	34–47
5.	रघुवीर सहाय	47–57
6.	तुलसीदास	58–69
7.	मलिक मुहम्मद जायसी	69–80
8.	विद्यापति	80–90
9.	घनानंद	90–96

गद्य खण्ड

1.	प्रेमघन की छाया-स्मृति	– रामचंद्र शुक्ल	97–108
2.	सुमिरिनी के मनके	– पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	108–123
3.	संवदिया	– फणीश्वरनाथ 'रेणु'	123–137
4.	गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात	– भीष्म साहनी	137–148
5.	लघु कथाएँ	– असगर वजाहत	148–160
6.	जहाँ कोई वापसी नहीं	– निर्मल वर्मा	160–175
7.	दूसरा देवदास	– ममता कालिया	175–190
8.	कुटज	– हजारी प्रसाद द्विवेदी	190–205

अन्तराल भाग 2

1.	सूरदास की झोंपड़ी	(प्रेमचंद)	206–216
2.	बिस्कोहर की माटी	(विश्वनाथ त्रिपाठी)	216–226
3.	अपना मालवा-खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में	(प्रभाष जोशी)	226–236

अपठित बोध

1.	अपठित काव्यांश	237–265
2.	अपठित गद्यांश	265–288

रचना

(अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित)

1. कविता/नाटक/कहानी की रचना — **289-300**

2. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया — **301-311**

3. नये और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन– — **312-355**

1. प्रौद्योगिकी से संबंधित

1. मोबाइल फोन–वरदान या अभिशाप
अथवा
मोबाइल फोन का प्रचलन एवं प्रभाव — 312
2. साइबर अपराध के बढ़ते कदम : एक डिजिटल चुनौती
अथवा
सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध — 313
3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) वरदान या अभिशाप
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमत्ता
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है — 314
4. ऑनलाइन शॉपिंग — 314
5. बढ़ती तकनीक : सुविधा या समस्या — 315
6. दैनिक जीवन में विज्ञान — 316
7. इन्टरनेट : ज्ञान की दुनिया
अथवा
इन्टरनेट : लाभ और हानि
अथवा
इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
विद्यार्थी–जीवन में इन्टरनेट की भूमिका (उपयोगिता) — 316
8. संचार माध्यम व उसके बढ़ते प्रभाव
अथवा
भारत में संचार–क्रान्ति का प्रसार — 317
9. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव
अथवा
कम्प्यूटर के बढ़ते चरण — 318
10. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप — 318

11. मानव के लिए विज्ञान–वरदान या अभिशाप
अथवा
विज्ञान के बढ़ते कदम 319
12. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 319
13. डिजिटल दुनिया 320

2. सामाजिक चुनौतियों एवं समस्याओं से संबंधित

14. भारत में अस्पृश्यता : एक गंभीर सामाजिक चुनौती 320
15. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 321
16. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या
अथवा
कन्या–भ्रूण हत्या पाप है : इसके जिम्मेदार आप हैं।
अथवा
कन्या–भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 322
17. घटते रोजगार–बढ़ती बेरोजगारी
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में बेरोजगारी की समस्या 322
18. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य
अथवा
भौतिकता–व्यामोह से मानव–मूल्यों का पतन 323
19. भारतीयता पर अपसंस्कृति का दुष्प्रभाव 324
20. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या
अथवा
भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 324
21. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई की मार 325
22. मिलावट का रोग
अथवा
खाद्य–पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज 326

3. राजस्थान से संबंधित

23. राजस्थान की शौर्य परम्परा 326
24. राजस्थान में लोक जीवन 327
25. राजस्थान के पर्यटन–स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन 327
26. राजस्थान में गहराता जल–संकट 328

4. शिक्षा से संबंधित

27. शिक्षा का अधिकार 329
28. सबके लिए शिक्षा
अथवा
सर्वशिक्षा अभियान
अथवा
सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 329
29. शिक्षा की पुनर्व्यवस्था 330

5. विद्यार्थियों एवं युवाओं से संबंधित

30. इम्तहान के दिन 330
31. घर से स्कूल तक सफर के अनुभव 331
32. Gen-Z (जेन जी) : आधुनिक युग की नई पहचान और चुनौतियाँ 331
33. योग और विद्यार्थी जीवन 332
34. बालक का बचपन बचाओ 332
35. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन का महत्व
अथवा
विद्यार्थी एवं अनुशासन 333
36. राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका
अथवा
राष्ट्र-निर्माण में युवकों का योगदान 334
37. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा का महत्त्व 334

6. महिलाओं से संबंधित

38. महिला सशक्तिकरण 335
39. कामकाजी महिला और राष्ट्र निर्माण 336
40. शिक्षित नारी : सुख-समृद्धिकारी 336
41. एक कामकाजी औरत की शाम 337

7. पर्यावरण से संबंधित

42. पर्यावरण संरक्षण में नागरिक कर्त्तव्य 337
43. प्रकृति और मानव 338
44. पर्यावरण प्रदूषण : कारण एवं निवारण

अथवा
पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों का दायित्व
अथवा
बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 338

8. भारत से संबंधित

45. ऑपरेशन सिन्दूर : भारत का गौरव 339
46. नियमित योग : आज की आवश्यकता 340
47. स्मार्ट सिटी मिशन : आधुनिक भारत की नई पहचान 340
48. विकसित भारत–रोजगार एवं आजीविका गारंटी मिशन (ग्रामीण) (VB-G RAM G) 341
49. मेक इन इंडिया अथवा स्वदेशी उद्योग 342
50. आत्मनिर्भर भारत 342
51. राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान
अथवा
स्वच्छ भारत मिशन/अभियान 343
52. सूचना का अधिकार : लाभ व सीमाएँ 343
53. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ 344

9. अन्तर्राष्ट्रीय संबंधित

54. टैरिफ वार का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव 345
55. बढ़ता अन्तर्राष्ट्रीय तनाव और बिगड़ते रिश्ते
अथवा
'तृतीय विश्व युद्ध की ओर बढ़ता विश्व' 345
56. आतंकवाद : वैश्विक क्षितिज पर
अथवा
आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या
अथवा
विश्व चुनौती : बढ़ता आतंकवाद
अथवा
आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 346

10. अन्य/विविध

57. मेरी प्रिय रचना
अथवा
मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस 347
58. स्वच्छता की जीवन में महत्ता 347

59. मनोरंजन के आधुनिक साधन 348
60. स्वावलम्बन
अथवा
स्वावलम्बन का महत्त्व
अथवा
स्वावलम्बन की एक झलक पर, न्यौछावर कुबेर का कोष 348
61. हमारा स्वास्थ्य और भोजन 349
62. जल-संरक्षण का महत्त्व
अथवा
जल-संरक्षण-आज की आवश्यकता
अथवा
जल संरक्षण : जीवन सुरक्षण
अथवा
जल ही जीवन है 349
63. प्राकृतिक आपदाएँ : कारण और निवारण 350
64. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 350
65. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 351
66. जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्त्व 352
67. स्वतंत्रता की खोज 352
68. 'मेरे मुहल्ले का चौराहा' 352
69. मेरा प्रिय टाइम पास 353
70. किसी खास दिन पर लगने वाला हाट बाजार 353
71. समय का सवाल 354
72. सावन की पहली झड़ी 354
73. झरोखे से बाहर 355
74. दीया और तूफान 355

काव्यांग-परिचय

(i) (अ) काव्य-गुण, (ब) काव्य-दोष 356-375
(ii) छन्द 376-389
(iii) अलंकार 389-402

❐❐❐

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026

हिन्दी साहित्य

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। (i से xii) [12×1=12]

(i) इनमें से मालवा क्षेत्र में बहने वाली नदी है— [1]
(अ) बनास (ब) लूणी (स) घग्घर (द) चंबल

(ii) छप्पन का अकाल किस विक्रमी संवत में पड़ा? [1]
(अ) 1956 (ब) 2056 (स) 1856 (द) 1756

(iii) किसका फूल सूँघकर बर्रे ततैया का डंक झड़ जाता है? [1]
(अ) सनई का (ब) कोकाबेली का (स) बेर का (द) हरसिंगार का

(iv) ''तुम्हारी तरफ से मेरा दिल साफ है।'' सूरदास ने ये वाक्य किससे कहा? [1]
(अ) भैरों को (ब) जगधर को (स) नायकराम को (द) सुभागी को

(v) 'पहचान' लघुकथा में राजा ने सबसे पहले क्या हुक्म दिया? [1]
(अ) सब अपने-अपने होंठ सिलवा लें। (ब) सब प्रजा अपने कान बंद कर लें।
(स) सब लोग अपनी आँखें बंद रखेंगे। (द) सब लोग अपने मुँह बंद कर लें।

(vi) 'दूसरा देवदास' कहानी के पात्र मंगल पंडा के अनुसार अस्नान कब अधूरा रहता है? [1]
(अ) स्नान के बाद भगवान के दर्शन नहीं करने पर। (ब) स्नान के बाद दक्षिणा नहीं देने पर।
(स) स्नान के बाद संतों की सेवा करने पर। (द) स्नान के बाद चंदन के तिलक के बगैर।

(vii) 'दिशा' कविता में कवि ने बच्चे से क्या पूछा? [1]
(अ) सूर्य किस दिशा में अस्त होता है? (ब) हिमालय किधर है?
(स) तुम्हारा घर किधर है? (द) हिंद महासागर किधर है?

(viii) ''नैन चुवहिं जस माहुँट नीरु।'' पंक्ति में प्रयुक्त 'माहुँट' का अर्थ है— [1]
(अ) क्लिष्ट (ब) मेंढक (स) मूसलाधार (द) महावट

(ix) कहानी विधा को नाटक विधा से अलग करने वाला तत्त्व है— [1]
(अ) कथानक (ब) संवाद (स) अभिनय (द) पात्र

(x) नाट्य-शास्त्र के अनुसार नाटक का शरीर किसे कहा गया है? [1]
(अ) समय का बंधन (ब) बोले जाने वाले शब्द
(स) पात्र का अंतर्द्वंद्व (द) उद्देश्य

(xi) सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली में कहाँ होती है? [1]
(अ) मध्य एवं अंत के बीच में (ब) शीर्ष पर
(स) मध्य में (द) अंत में

(xii) इनमें से व्याख्यात्मक ककार है— [1]

(अ) क्या (ब) कौन (स) कैसे (द) कब

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–(i से vi) [6×1=6]

(i) ''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।'' पंक्ति में .... गुण है। [1]

(ii) ''हेमसुता पति-वाहन प्रिय'' पंक्ति में .... दोष है। [1]

(iii) काव्य में जहाँ अर्थ के आधार पर चमत्कार उत्पन्न हो, उन अलंकारों को .... कहते हैं। [1]

(iv) ''देखो दो-दो मेघ बरसते, म्हे प्यासी की प्यासी।'' पंक्ति में .... अलंकार है। [1]

(v) प्रत्येक चरण में 31 वर्ण, 16-15 पर यति तथा चरण के अंत में गुरु-लघु नहीं होने के लक्षण वाला छंद .... है। [1]

(vi) गण को ज्ञात करने का सूत्र यमातारा .... है। [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (i से vi) [6×1=6]

(i) प्रसाद गुण की परिभाषा लिखिए। [1]

(ii) छंद कितने प्रकार के होते हैं? नाम लिखिए। [1]

(iii) कहानी लेखन कला को सीखने का सबसे अच्छा तरीका कौन-सा है? [1]

(iv) कविता सर्जन के संबंध में कौन-सी शैली कवि की ताकत बन जाती है? [1]

(v) 'संपादक के नाम पत्र' स्तंभ की सामान्य जानकारी दीजिए। [1]

(vi) फीचर की परिभाषा लिखिए। [1]

4. दिए गए अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— [6×1=6]

सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति सार्वभौम सत्य के आधार पर प्रतिष्ठित धार्मिक भावना और दार्शनिक चिन्तनधारा के माध्यम से हुई। कला, शिल्प, साहित्य और संगीत इन्हीं की आनुषंगिक उपलब्धियाँ हैं। इन सबका क्षेत्र विशाल मानव समाज है जिसकी प्रेरणा और प्रसाद से मनुष्य जीवन-यापन करता है। भारतीय जीवन में समय-समय पर विदेशी और विजातीय तत्त्वों के आते रहने के कारण परस्पर संघात होते रहे हैं। परंतु इन्हीं से होकर ऐसी जीवन शक्ति का संचार भी होता रहा है कि हम डूबते-डूबते भी उबरते चले आए हैं, निष्प्रभ या निस्तेज न होकर नवजीवन की अरुणिमा से महिमा मंडित होते रहे हैं। इन सबके मूल में हमारी समन्वय साधना की प्रवृत्ति प्रधान रही है। इसे हम मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के संदर्भ में समझ सकते हैं।

(i) आनुषंगिक शब्द का अर्थ है— [1]

(अ) अस्पष्ट (ब) अद्वितीय (स) अनुपम (द) प्रासंगिक

(ii) 'अरुणिमा' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है— [1]

(अ) मा (ब) ईमा (स) इमा (द) अणिमा

(iii) विदेशी और विजातीय तत्त्वों के परस्पर संघात से भारत पर क्या प्रभाव पड़ा? [1]

(अ) भारत की संस्कृति नष्ट हो गई। (ब) हम निष्प्रभ और निस्तेज हो गए।

(स) हम नैतिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर हो गए।

(द) भारत में अदम्य जीवन शक्ति का संचार हुआ।

(iv) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। [1]

(v) सांस्कृतिक चेतना की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति किस माध्यम से हुई? [1]

(vi) गद्यांश का प्रतिपाद्य लिखिए। [1]

5. दिए गए अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए— [6×1=6]

हे प्रभु! आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बने।
ब्रह्मचारी, धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बने।

सत्य बोलें, झूठ त्यागे, मेल आपस में करें।
दिव्य जीवन हो हमारा, यश तेरा गाया करें।
जाये हमारी आयु हे प्रभु, लोक के उपकार में।
हाथ डाले हम कभी ना, भूलकर अपकार में।

(i) ''मेल आपस में करें'' पंक्ति का प्रतीकार्थ है— [1]
(अ) द्वेष का प्रसार करें। (ब) मैल (अस्वच्छता) को अवरुद्ध करें।
(स) सद्भाव आधारित आपस में व्यवहार करें। (द) आपस में मल्ल युद्ध करें।

(ii) 'सदाचारी' शब्द का अर्थ इनमें से हैं— [1]
(अ) अच्छी वेशभूषा वाला (ब) अच्छे स्वास्थ्य वाला
(स) अच्छे स्वरूप वाला (द) अच्छे व्यवहार वाला

(iii) कवि कैसे जीवन की कामना कर रहा है? [1]
(अ) कलुषित जीवन की। (ब) दिव्यतापूर्ण जीवन की।
(स) नैराश्यपूर्ण जीवन की। (द) रुग्ण जिंदगी की।

(iv) पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]

(v) कवि प्रभु से क्या प्रार्थना कर रहा है? [1]

(vi) पद्यांश के अनुसार कवि क्या नहीं करना चाहता है? [1]

खण्ड-ब

निर्देश : प्रश्न संख्या 6 से 15 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द सीमा 40 शब्द हैं।

6. सूरदास को झोंपड़े के जल जाने का दु:ख न था, दु:ख था उस पोटली का। सूरदास को पोटली का दु:ख क्यों था? [2]
7. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ में गाँव में बारिश आने पर कैसा वातावरण होता था? [2]
8. 'अपना मालवा-खाऊ-उजाडू सभ्यता में' पाठ के आधार पर बताइए कि मालवा के सब राजा क्या जानते थे? [2]
9. 'देवसेना का गीत' में 'प्रलय चल रहा अपने पथ पर' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [2]
10. 'बारहमासा' के फागुण मास में विरह से नागमती की कैसी स्थिति हो रही है? [2]
11. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' या घनानंद का साहित्यिक परिचय लिखिए। [2]
12. बालक द्वारा लड्डू माँगने पर पिता एवं अध्यापक क्यों निराश हो गए? [2]
13. किसान को साझे में खेती करने के लिए किसने और क्या पट्टी पढ़ाई? [2]
14. रामचंद्र शुक्ल या ममता कालिया का साहित्यिक परिचय लिखिए। [2]
15. मानवीकरण अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। [2]

खण्ड-स

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

16. 'सरोज स्मृति' कविता में पिता-पुत्री के आत्मीय संबंध, पिता के संघर्ष और पुत्री वियोग की पीड़ा का संवेदनशील चित्रण है। उक्त कथन की समीक्षा कीजिए। [3]

अथवा

भरत राम के प्रति अटूट श्रद्धाभाव एवं सतत समर्पण रखते हैं। उक्त कथन की समीक्षा कीजिए।

17. ''विकास का उजला पहलू अपने पीछे कितने व्यापक पैमाने पर विनाश का अँधेरा लेकर आया है।'' 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के आधार पर कथन की समीक्षा कीजिए। [3]

अथवा

'कुटज' पाठ के आधार पर कुटज वृक्ष की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

18. सूरदास पर ''खेल में रोते हो'' की चेतावनी सुनकर क्या प्रभाव पड़ा? [3]

अथवा

'अपना मालवा खाऊ उजाडू सभ्यता में' पाठ के अनुसार पर्यावरण विनाश से प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। कैसे? समझाइए।

खण्ड-द

19. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।** [5]

संवाद पहुँचाने का काम सभी नहीं कर सकते। आदमी भगवान के घर से संवदिया बनकर आता है। संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना, जिस सुर और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना सहज काम नहीं है। गाँव के लोगों की गलत धारणा है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता है। न आगे नाथ ना पीछे पगहा। बिना मज़दूरी लिए ही जो गाँव-गाँव संवाद पहुँचावे, उसको और क्या कहेंगे?

अथवा

एक वृद्ध महाशय ने उसके सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया और कहा कि जो तू इनाम माँगे वही दें। बालक कुछ सोचने लगा। बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था, हृदय में कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक आँखों में दिख रही थी। कुछ खाँसकर, गला साफ़ कर नकली परदे के हट जाने पर स्वयं विस्मित होकर बालक ने धीरे से कहा, 'लड्डू'। पिता और अध्यापक निराश हो गए। इतने समय तक मेरा श्वास घुट रहा था। अब मैंने सुख से साँस भरी।

20. **निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–** [5]

अमुक दिन अमुक बार मदन महीने की होवेगी पंचमी
दफ़्तर में छुट्टी थी-यह था प्रमाण
और कविताएँ पढ़ते रहने से यह पता था
कि दहर-दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल
आम बौर आवेंगे
रंग-रस-गंध से लदे-फँदे दूर के विदेश के
वे नंदन-वन होवेंगे यशस्वी।

अथवा

के पतिआ लए जाएत रे मोरा पिअतम पास।
हिए नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास॥
एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।
सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआए॥
मोर मन हरि हर लए गेल रे अपनो मन गेल।
गोकुल तेजि मधुपुर बस रे कन अपजस लेल॥

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए— [5]

(i) ऑपरेशन सिंदूर : भारत का गौरव
(ii) राजस्थान की शौर्य परंपरा
(iii) मेरी प्रिय रचना
(iv) नियमित योग : आज की महती आवश्यकता।

हिन्दी साहित्य–कक्षा–12
अन्तरा भाग 2 (पद्य खण्ड)

1. जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय–आधुनिक छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में काशी में हुआ था। प्रसादजी का जन्म तो बहुत सम्पन्न परिवार में हुआ था, लेकिन बदलते काल चक्र ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। बारह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। तत्पश्चात् दो–तीन वर्ष में ही माता का स्वर्गवास हो गया और जब प्रसाद सत्रह वर्ष के थे, तब बड़े भाई शंभूरतन की भी मौत हो गई। अल्पायु में ही ऋणग्रस्त परिवार का सारा दायित्व प्रसाद के सिर पर आ गया था। इन अवसादों और वेदनाओं का प्रभाव प्रसाद के जीवन व साहित्य दोनों पर पड़ा।

प्रसादजी की विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही हो पाई थी, किन्तु स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पालि, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्त्व के प्रकांड विद्वान् प्रसाद अत्यन्त सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्तित्व के धनी थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद मूलतः कवि थे; लेकिन उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आदि विविध साहित्यिक गद्य विधाओं में उच्च कोटि की रचनाओं का सृजन किया। ये भारतीय संस्कृति और जीवन–मूल्यों से प्रभावित एवं देश–प्रेम से मण्डित थे। इनके काव्य में आध्यात्मिकता, रहस्यवाद, राष्ट्रीय जागरण की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। प्रसाद को हिन्दी साहित्य में छायावाद का उन्नायक माना जाता है। इस दृष्टि से इनका 'कामायनी' महाकाव्य कालजयी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इनका निधन सन् 1937 में हुआ।

कठिन शब्दार्थ एवं सप्रसंग व्याख्याएँ

देवसेना का गीत

(1)

आह! वेदना मिली विदाई!
मैंने भ्रम-वश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई।

कठिन शब्दार्थ–वेदना = दु:ख, कष्ट-पीड़ा। **संचित** = एकत्रित। **मधुकरियों** = भिक्षा।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' के 'देवसेना का गीत' से अवतरित किया गया है। इसमें मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन देवसेना की निराशा एवं वेदना की अभिव्यक्ति है।

व्याख्या–देवसेना सोचती है कि अब जीवन के अन्तिम पड़ाव पर भी मुझे पीड़ा ही मिली। अर्थात् जीवन से विदा लेते समय भी मुझे दु:खों से छुटकारा नहीं मिला। अपने यौवन में किये गए क्रियाकलापों को ही मैंने कर्म माना जबकि आज लगता है कि मैंने भिक्षा माँगने का ही कार्य किया है और कुछ नहीं किया है। अतीत की वे सभी मधुर यादें देवसेना को कचोट रही हैं और उन्हें अतिशय वेदना की अनुभूति हो रही है।

विशेष–(i) कवि ने देवसेना के माध्यम से अपनी वेदना व्यक्त की है।

(ii) तत्सम शब्दावली एवं गेयता द्रष्टव्य है। करुण रस की प्रधानता है।

(2)

छलछल थे संध्या के श्रमकण,
आँसू-से गिरते थे प्रतिक्षण।
मेरी यात्रा पर लेती थी–
नीरवता अनंत अँगड़ाई।
श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन-विपिन की तरु-छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने–
यह विहाग की तान उठाई।

कठिन शब्दार्थ–नीरवता = खामोशी। **अनन्त** = अन्तहीन। **श्रमित** = थका हुआ। **गहन** = घना। **विपिन** = जंगल। **पथिक** = यात्री। **श्रुति** = कान। **विहाग** = अर्धरात्रि में गाया जाने वाला गीत।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है। इसमें मालवा के राजा बन्धुवर्मा की बहिन देवसेना अपनी हृदयगत वेदना को लेकर चिन्तित दिखाई गई है।

व्याख्या–देवसेना अपने जीवन के अंतिम समय में वेदना का अनुभव करते हुए सोचती है कि मेरे जीवन का संध्या काल आ चुका है और जीवनभर के अनन्त परिश्रम के कण अर्थात् पसीने की बूँदें निरन्तर गिर रही हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वे पसीने की बूँदें आँसुओं के समान प्रतिपल आँखों से गिर रही हैं। मेरी जीवन यात्रा में अब चारों तरफ नीरवता या खामोशी फैली हुई थी। देवसेना कहती है कि थके हुए स्वप्नों की मधुर स्मृति में, जैसे वन के पेड़ों की गहरी छाया में थके-सोये पथिक को किसने आवाज दी। यह प्रेम-विरह की राग कौन सुना रहा है।

आशय है कि देवसेना, स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी और स्कन्दगुप्त जीवन के अंतिम मोड़ पर उसे साथ देने के लिए पुकार रहा है जहाँ देवसेना मना कर देती है और पीड़ा का अनुभव करती है।

विशेष–(i) कवि की स्वानुभूति वेदना रूप में व्यक्त हुई है। विहाग राग के माध्यम से वेदना की अधिकता व्यंजित हुई है।

(ii) 'स्वप्न' को मधुमाया कहना अनूठा प्रयोग है। भाषा तत्सम-प्रधान एवं भावानुकूल है। अनुप्रास, उपमा एवं रूपक अलंकार हैं। मुक्तक छन्द एवं करुण रस की प्रधानता है।

(3)

लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी,
रही बचाए फिरती कबकी।
मेरी आशा आह! बावली,
तूने खो दी सकल कमाई।

कठिन शब्दार्थ–सतृष्ण = तृष्णा के साथ। **दीठ** = दृष्टि। **सकल** = समस्त।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'स्कन्दगुप्त' नाटक से संकलित 'देवसेना का गीत' से लिया गया है। इसमें देवसेना के हृदय के मधुर स्वप्नों का वर्णन हुआ है।

व्याख्या–देवसेना कहती है कि जब वह यौवन से परिपूर्ण थी, तब उसे पाने के लिए न जाने कितने लोगों की ललचाई दृष्टि उस पर पड़ी, जबकि मैं उनकी दृष्टि से सदैव अपने को बचाती रही। वह कहती है कि अरी मेरी आशा, आज तुमने स्कन्दगुप्त के प्रस्ताव को पाकर मेरे हृदय में हलचल मचा दी है और मेरी मन की शान्ति खो दी है। क्योंकि यह आशा मेरे हृदय में जगकर ही मुझे हरा गई है। मैंने अपने जीवन की सारी कमाई खो दी है अर्थात् स्कन्दगुप्त का प्रेम खो दिया है। अत: बहुत व्यथित हूँ।

विशेष–(i) 'लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी, रही बचाए फिरती कबकी।' में यौवन काल के स्वाभाविक तथ्य का वर्णन है।

(ii) भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा अनुप्रास अलंकार है। मुक्तक छन्द करुण रस एवं प्रसाद गुण की प्रधानता है।

(4)

चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर,
प्रलय चल रहा अपने पथ पर।

मैंने निज दुर्बल पद-बल पर,
उससे हारी-होड़ लगाई।
लौटा लो यह अपनी थाती
मेरी करुणा हा-हा खाती
विश्व! न सँभलेगी यह मुझसे
इससे मन की लाज गँवाई।

कठिन शब्दार्थ–प्रलय = विध्वंस। **होड़** = स्पर्धा। **थाती** = धरोहर।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से संकलित 'देवसेना का गीत' से लिया गया है। इसमें कवि ने देवसेना के भावविह्वल हृदय से संसार को सम्बोधित करने का वर्णन किया है।

व्याख्या–देवसेना कहती है कि प्रलय मेरे जीवन-रथ पर सवार है, किन्तु अपनी दुर्बलताओं को जानते हुए भी और हार की निश्चितता का ज्ञान होने के बाद भी मैंने प्रलय से संघर्ष किया है। भाव यह है कि जीवन के सन्ध्याकाल का पूर्ण ज्ञान होने पर भी मैंने कभी हृदय से पराजय को स्वीकार नहीं किया है। अंत में देवसेना भाव-विह्वल होकर कहती है कि आपने मुझको विश्वास रूपी जो धरोहर सौंप रखी थी, उसे अब वापस ले लो। मेरी करुणा मुझे ही वेदना से व्यथित करते हुए समाप्त कर रही है। हे संसार, अब मुझसे यह प्रेम की पीड़ा नहीं सँभलेगी क्योंकि इसके कारण मैंने अपने ही मन की लाज एवं मर्यादा को खो दिया है अर्थात् मन में जो आत्मविश्वास था उसे खो दिया है।

विशेष–(i) देवसेना की वेदना एवं संघर्षपूर्ण जीवन का वर्णन प्रतीकों के माध्यम से किया गया है।

(ii) भाषा संस्कृतनिष्ठ है। अनुप्रास, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

कार्नेलिया का गीत

(1)

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर–नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर–मंगल कुंकुम सारा!

कठिन शब्दार्थ–अरुण = लालिमायुक्त। **मधुमय** = मिठास से भरा। **क्षितिज** = धरती और आकाश एक साथ मिलते हुए दिखाई देने वाला स्थान। **तामरस** = कमल, रक्तोत्पल। **गर्भ** = कोश। **विभा** = आलोक, प्रकाश। **तरुशिखा** = वृक्ष की चोटी। **मनोहर** = सुन्दर। **मंगल** = शुभ, कल्याणकारी। **कुंकुम** = सौभाग्यसूचक रंग।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' के एक प्रसिद्ध गीत 'कार्नेलिया का गीत' से लिया गया है। कार्नेलिया इसमें भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करती है।

व्याख्या–सिन्धु नदी के किनारे वृक्ष के नीचे बैठी हुई कार्नेलिया भारत की महत्ता का वर्णन करती हुई गा रही है कि यह हमारा भारत देश कितनी मधुरता से भरा हुआ है। यहाँ सूर्य की लालिमा फैली हुई है जिससे प्रातःकाल का समय प्रतीत होता है, वृक्षों की ऊँची-ऊँची सुन्दर चोटियों पर सरस सुनहरी आभा फैली हुई है। यह मनोरम भारत देश सबको आश्रय देता है। यहाँ वृक्षों की शाखाओं से छनकर जब सूर्य की किरणें कमलों पर अपनी कान्ति बिखेरती हैं तब वे पुष्पों पर नृत्य करती प्रतीत होती हैं। यहाँ चारों ओर जीवन का सुंदर, सरस, मनोहारी रूप दिखाई दे रहा है। जैसे सभी ओर सौभाग्यसूचक रंग अर्थात् कुंकुम फैला हो। यहाँ प्रातःकाल की शीतल, मंद, सुगंधित पवन बह रही है।

विशेष–(i) भारतवर्ष की महत्ता एवं राष्ट्रप्रेम का वर्णन किया गया है।

(ii) छायावादी शैली में प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

(iii) संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत एवं लाक्षणिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iv) प्रस्तुत कविता में अनुप्रास, रूपक और मानवीकरण अलंकार प्रयुक्त हैं।

(2)

लघु सुरधनु से पंख पसारे–शीतल मलयसमीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए–समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल–बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की–पाकर जहाँ किनारा।

हेमकुंभ ले उषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब–जगकर रजनी भर तारा।

कठिन शब्दार्थ–सुरधनु = इंद्रधनुष। **मलयसमीर** = चंदन की गंधयुक्त पवन। **नीड़** = घोंसला। **अनंत** = सागर। **हेमकुंभ** = स्वर्ण-कलश। **मदिर** = मस्ती पैदा करने वाला। **रजनी** = रात्रि।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चंद्रगुप्त' नाटक से संकलित 'कार्नेलिया का गीत' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कार्नेलिया भारत के महिमामय सौन्दर्य का गीत गाकर वर्णन कर रही है।

व्याख्या–कार्नेलिया गा रही है कि यहाँ पर मलयाचल पर्वत से प्रातःकाल की शीतल, सुगंधित मन्द हवा चल रही है जो सम्पूर्ण भारतवर्ष को सहारा प्रदान करती है। जिससे यह पर्वत इन्द्रधनुष के समान दिखाई देता है। यहाँ आकाश में पक्षी अपने पंख फैलाकर भारत की ओर अपने प्यारे घोंसलों की कल्पना करके उड़ते हैं। अर्थात् उनको यह देश अपना घर लगता है। जब वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तो ऐसा लगता है कि यहाँ के लोगों की आँखों से करुणा-जल बरस रहा है। सागर की लहरों को भारत के किनारों से टकराने के बाद ही विश्राम मिलता है। प्रातःकाल में जब उषा का आगमन होता है तो वह ऐसे लगती है मानो सूर्य-रूपी स्वर्ण-कलश से सुख की धारा बिखेर रही हो। उस समय पूरी रात जागने के कारण तारे फीकी चमक से ऊँघने लगते हैं।

विशेष–(i) इसमें भारत की सांस्कृतिक गरिमा, मानवीय करुणा, संवेदना एवं अतिथि-परायणता आदि की सशक्त व्यंजना हुई है।

(ii) अनुप्रास, रूपक, उपमा और मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

(iii) बिम्बों की अधिकता है।

(iv) संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत भाषा में छायावादी गीत है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

देवसेना का गीत–

प्रश्न 1. ''मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई''–पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–देवसेना स्कन्दगुप्त को चाहती थी किन्तु स्कन्दगुप्त मालवा के धनकुबेर की पुत्री विजया को चाहता था। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर स्कन्दगुप्त देवसेना को पाने के लिए तैयार हुआ था लेकिन तब देवसेना तैयार नहीं थी। तब व्यथित हृदय से देवसेना सोचती है कि मैंने अपनी आकांक्षा रूपी पूँजी को भीख की तरह लुटाया है। मैं अभिलाषा रखकर भी स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी। मुझे अब जीवन के अंतिम मोड़ पर इसी बात की वेदना है।

प्रश्न 2. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

उत्तर–कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है कि आशा तो असंभव बात की भी बनी रहती है। देवसेना को आशा थी कि स्कन्दगुप्त उसे मिलेगा और जब वह मिला तो देवसेना ने उसके अनुनय-विनय को ठुकरा दिया। वह प्रेम-भावना भी तो एक आशा ही थी जो द्वार से लौटाने के बाद भी पाने की आशा रखती है, उसे बावली ही तो कहा जाएगा।

प्रश्न 3. ''मैंने निज दुर्बल·······होड़ लगाई'' इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद-बल' और 'हारी-होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'दुर्बल पद-बल' में देवसेना के बल की सीमा का ज्ञान कराता है अर्थात् देवसेना जानती है कि वह दुर्बल है फिर भी वह अपने भाग्य से लड़ रही है। इसी प्रकार 'होड़ लगाई' पंक्ति में निहित व्यंजना देवसेना की लगन व तत्परता को दर्शाता है। देवसेना इस बात से भली-भाँति परिचित है कि प्रेम में उसकी हार है फिर भी पूरी लगन से वह **प्रलय** से होड़ लगाती है और हार नहीं मानती है।

प्रश्न 4. काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

(क) श्रमित स्वप्न की मधुमाया·············तान उठाई।

(ख) लौटा लो·············लाज गँवाई।

उत्तर–(क) भावपक्ष–इसमें कवि ने एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की है जो थकान के कारण सघन वन में वृक्षों की छाया में सोया हुआ है। वह स्वप्नलोक की मधुर अनुभूतियों में खोया हुआ है, तभी किसी ने अर्धरात्रि में गाया जाने वाला विहाग राग अलापना शुरू किया, जिससे उसकी नींद उचट गई और स्वप्न भंग हो गया।